170वाँ अंक

तनाव-मुक्ति विशेषांक

विक्रम संवत् 2070, शक संवत् 1935

ISO 9001:2008

ज्योतिष मंथन

वर्ष- 15 अंक- 2 जुलाई - 2013

भारतीय प्राच्य विद्याओं की मासिक पत्रिका

तनाव प्रबंधन

चक्र और मुद्राएं
वास्तु से तनाव-मुक्ति
मनोविकृतियाँ

ग्रह-गोचर
आध्यात्म
आत्मघात
ज्योतिष
हिंसा
योग

मूल्यः 35/-

नीच भंग राजयोग - एक विश्लेषण

आचार्य के. विमलेन्दु

ज्योतिष के क्षेत्र में योग शब्द विशेष महत्वपूर्ण एवं आकर्षक है। सामान्यत: जन्मकुण्डली में किसी ग्रह के नीच राशि में स्थित होने पर अच्छा फल नहीं माना जाता है लेकिन अनेक ऋषियों ने ज्योतिष ग्रंथों में उल्लेख किया है कि नीच भंग होने पर वह ग्रह राजयोग कारक हो जाता है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि उसके द्वारा जातक के जीवन में समृद्धि, कीर्ति और मान-सम्मान आदि प्राप्त होते हैं। फलदीपिका (7-28) में मन्त्रेश्वर जी ने लिखा है कि -

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रह: स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथ:।
स चन्द्रलग्नाद्धदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिक चक्रवर्ती।। अर्थात् यदि किसी के जन्म के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो और उस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केन्द्र में हो और जो ग्रह नीच है उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केन्द्र में हो तो जातक धार्मिक चक्रवर्ती राजा होता है। यही श्लोक जातक पारिजात (7-13), जातक-देशमार्ग (8-20) आदि ज्योतिष ग्रंथों में भी दिया गया है। ढुंढिराज ने उपर्युक्त श्लोक में लग्न से केन्द्र में होना लिखा है। फलदीपिका (7-27 से 30), जातक पारिजात (7-14/15), जैमिनि सूत्र, सर्वार्थ चिंतामणि, ज्योतिष रत्नाकर और शंभु होरा आदि ग्रंथों में नीच भंग राजयोग का उल्लेख है, जिसके आधार पर इस योग की निम्नलिखित परिस्थितियां प्रकाश में आती हैं-

1. नीचगत ग्रह जिस राशि में नीच हो, उस राशि का स्वामी लग्न या चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हो।
2. जो ग्रह नीच राशि में स्थित हो, उसकी उच्च राशि का स्वामी लग्न या चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हो।
3. नीच राशि अपनी राशि में स्थित नीच ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखे।
4. उस नीच राशिस्थ ग्रह का उच्च नाथ और नीच राशि का स्वामी दोनों परस्पर केन्द्र में स्थित हो।
5. यदि कोई ग्रह नीच राशि में हो और उस ग्रह का नवांशपति यदि जन्म लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो और जन्म लग्न चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर राशि) में हो।
6. यदि कोई ग्रह नीच राशि में हो और उस ग्रह का नवांशपति यदि जन्म लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो और जन्म लग्न द्विस्वभाव राशिगत हो परंतु लग्न का नवांशेश चर राशिगत हो।
7. नीच ग्रह जिस राशि में स्थित हो, उसका स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में हो।
8. जब कोई ग्रह नीच राशि में उस ग्रह के साथ हो, जो स्वयं उच्च का हो और दोनों केन्द्र में हों।

नीचता भंग न होने की स्थिति का वर्णन करते हुए देवकेलकर का कहना है कि - **नीचस्तु नीचाधिपतेर्यदि केन्द्र स्थित नैवमुपेति भंगम्।**

जैसे गुरु मकर राशि में हो और नीच राशि के स्वामी शनि लग्न अथवा चंद्र लग्न से केन्द्र में हो किंतु वह मेष राशि में स्थित हो तो गुरु की नीचता भंग नही होती।

ज्योतिष शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार नीच भंग राजयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस योग से युक्त जातक सामान्य अथवा धनहीन परिवार में उत्पन्न होकर भी ख्याति, उच्च पद एवं सम्मान की प्राप्ति कर धनार्जन करता है।

नीचभंग राजयोग के विषय में देखने में आया है कि -

1. जो ग्रह नीच राशि में है और उसके द्वारा नीच भंग राजयोग निर्मित हो रहा है, तो वह नैसर्गिक शुभ ग्रह अपने कारकत्व से संबंधित शुभ प्रभाव अवश्य देते हैं। जैसे- गुरु का नीच भंग होने से संतान सुख में वृद्धि होगी, सूर्य का नीच भंग होने से पिता के सुख में वृद्धि होगी, मंगल का नीच भंग होने से भ्रातृ सुख में वृद्धि होगी आदि। इसी प्रकार तात्कालिक शुभ ग्रह भी अपने कारकत्व के अनुसार अपने भाव से संबंधित फल को प्रदान करते हैं।
2. किसी जन्मपत्रिका में एक या एक से अधिक राजयोग कारक होकर नीच के है और नीच भंग राजयोग निर्मित करते हैं तो जितने ग्रह यह योग बना रहे होते हैं, जीवन में उतनी बार परिवर्तन आने के बाद ही नीच भंग राजयोग का पूर्णफल प्राप्त होता है।

उदाहरण स्वरूप कर्क लग्न की कुण्डली में मंगल और गुरु दोनों राजयोग कारक या योगकारक ग्रह हैं। यदि यह दोनों नीच के होकर केंद्र में स्थित हों और इनका नीच भंग हो रहा हों, ऐसी हालत में उस जातक को उसके कार्यों में दो बार परिवर्तन होने के बाद ही जीवन में स्थायित्व आता है और वह अपने कार्यक्षेत्र में शीर्ष स्थान पर पहुंच पाता है।

उदाहरण कुण्डली-1 : श्री ब्रजेश लोहिया
जन्म दिनांक : 18.08.1978, समय : 09.16 A.M.
स्थान : मुम्बई (महाराष्ट्र)

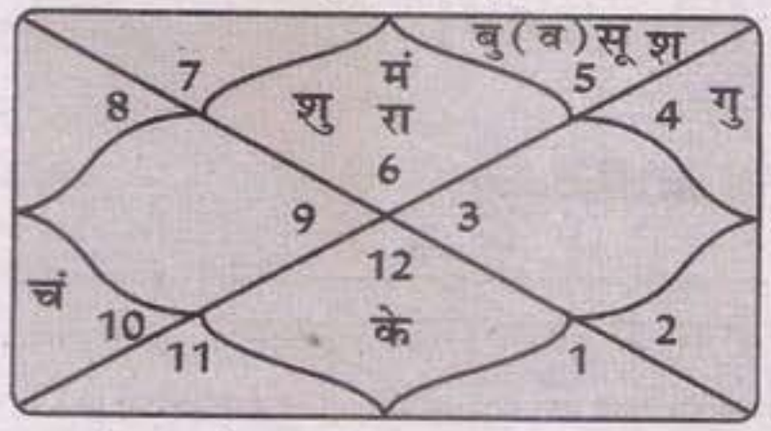

जन्म के समय भोग्य दशा-मंगल 04 वर्ष 09 मास 19 दिन।

कुण्डली-1 : इनकी कुण्डली कन्या लग्न की है। इस कुण्डली में नवमाधिपति शुक्र है जो लग्न में नीच राशि में स्थित हैं। चंद्रमा से सप्तम भाव में शुक्र के उच्चाधिपति गुरु के स्थित होने से शुक्र का नीच भंग हो रहा है। नवमेश शुक्र पिता का द्योतक होने के कारण पिता के सुख को बढ़ाने वाला है। इन्हें पिता से सहयोग मिला और यह राहु की महादशा में वर्ष 2001 में पिता के व्यवसाय में सहयोग करना शुरु किए लेकिन इन्हें बहुत सफलता नहीं मिली। इस कार्य को 2008 में छोड़कर कमीशन के आधार पर कई व्यवसाय से जुड़े और अपनी अच्छी प ह चान बनाई है।

उदाहरण कुण्डली-2 : श्री गौरव शेखर
जन्म दिनांक : 19.10.1977, समय : 10.55 A.M.
स्थान : मुजफ्फरपुर (बिहार)

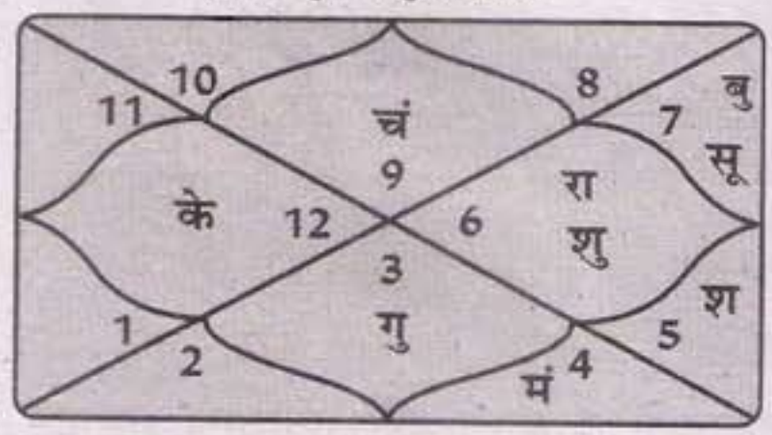

जन्म के समय भोग्य दशा-सूर्य 05 वर्ष 03 मास 23 दिन।

कुण्डली-2 : इनकी कुण्डली धनु लग्न की है और कुण्डली में तीन ग्रह भाग्येश सूर्य आयेश शुक्र और पंचमेश मंगल नीच राशि में हैं। तीनों का क्रमश: गुरु, शुक्र और चंद्रमा के लग्न से केन्द्र में होने के कारण नीच भंग हो रहा है और राजयोग निर्मित हो रहा है। 2001 में बी.टेक. कर पहले पुणे में एक कंपनी में अपना योगदान दिया, फिर मई 2002 में युगाण्डा की एक कंपनी में काम किया। नवंबर 2007 में यूएसए की कंपनी में अपनी सेवा दी। यह वहां अभी भी पदस्थापित हैं।

उदाहरण कुण्डली-3 : श्री सजिथ
जन्म दिनांक : 18.10.1983, समय : 06.40 A.M.
स्थान : पारूर (आंध्रप्रदेश)

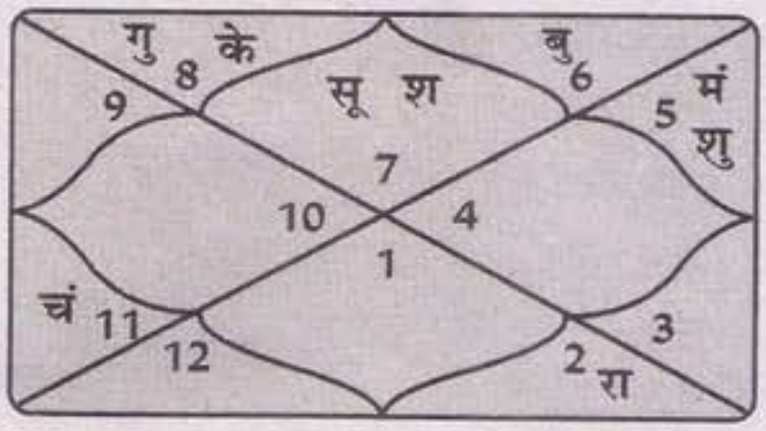

कुण्डली-3 : इनकी कुण्डली तुला लग्न और कुंभ राशि की है। इस कुण्डली में आयेश सूर्य नीच राशि तुला में स्थित हैं। चंद्रमा से केन्द्र में शुक्र के स्थित होने से सूर्य का नीच भंग हो रहा है। इन्होंने कम्प्यूटर विज्ञान में इंजीनियरिंग करके 2005 में बैंगलोर में एक साफ्टवेयर कंपनी में कार्य करना प्रारंभ किया। एक वर्ष बाद इस पद को इन्होंने छोड़ दिया। वर्ष 2008में शनि की महादशा में बुध की अंतर्दशा में यह सिंगापुर गए और वहां की एक अच्छी कंपनी में कार्यरत हैं और संतुष्ट हैं।

उदाहरण कुण्डली-4 : श्री राजेश कुमार सिंह
जन्म दिनांक : 1810.1973, समय : 02.15 P.M.
स्थान : राजगीर (बिहार)

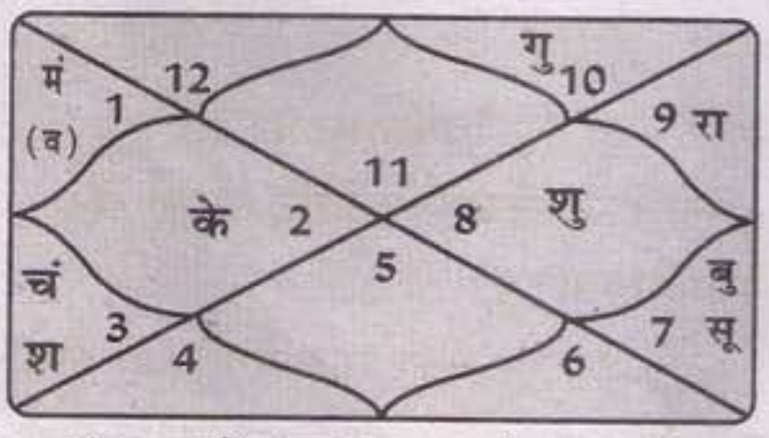

जन्म के समय भोग्य दशा-गुरु 11 वर्ष 5 मास 6 दिन।

कुण्डली-4 : यह कुण्डली कुंभ लग्न और मिथुन राशि की है। इसमें सप्तमेश सूर्य तुला राशि में नवम भाव में नीच राशि में स्थित हैं। तुला राशि के स्वामी शुक्र लग्न से केन्द्र में दशम भाव में स्थित होकर सूर्य का नीच भंग कर रहे हैं। जातक पेट्रोलियम इंजीनियरिंग में एम.टेक रसिया से 1998 में पास किए। इसके बाद भारत में बारी-बारी से दो कंपनियों में कार्य किया। बुध महादशा और सूर्य अंतर्दशा में इन्हें मस्कट से बुलाया आया। बुध महादशा और चंद्र की अंतर्दशा में 2011 के 14 जुलाई को यह मस्कट में पदस्थापित हुए।

उदाहरण कुण्डली-5 : श्री आशुतोष बल्लभ
जन्म दिनांक : 15.04.1979, समय : 06.46P.M.
स्थान : पटना (बिहार)

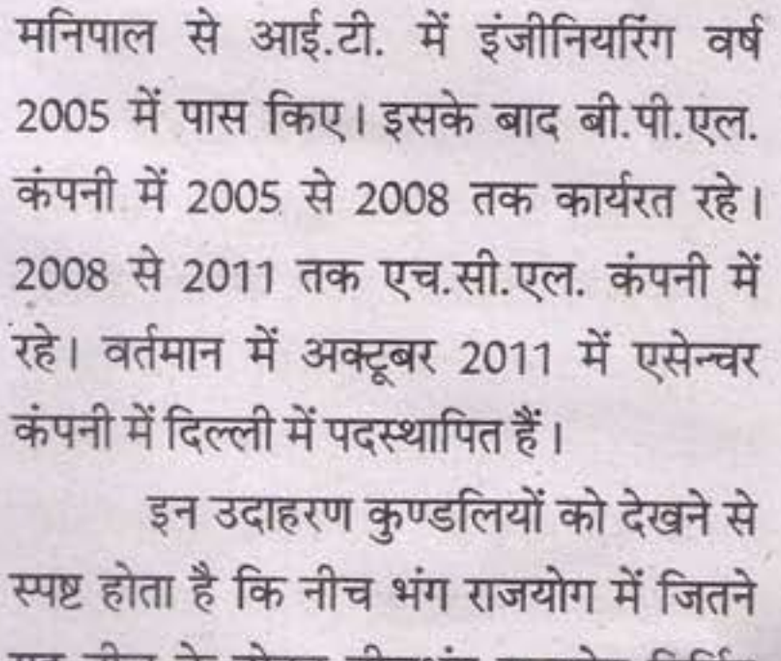

जन्म के समय भोग्य दशा-गुरु 11 वर्ष 5 मास 6 दिन।

कुण्डली-5 : यह कुण्डली तुला लग्न और कर्क राशि की है। इसमें भाग्येश बुध मीन राशि में षष्ठ भाव में नीच राशि में स्थित हैं। मीन राशि के स्वामी गुरु लग्न से केन्द्र में दशम भाव में स्थित होकर बुध का नीच भंग कर रहे हैं। मनिपाल से आई.टी. में इंजीनियरिंग वर्ष 2005 में पास किए। इसके बाद बी.पी.एल. कंपनी में 2005 से 2008 तक कार्यरत रहे। 2008 से 2011 तक एच.सी.एल. कंपनी में रहे। वर्तमान में अक्टूबर 2011 में एसेन्चर कंपनी में दिल्ली में पदस्थापित हैं।

इन उदाहरण कुण्डलियों को देखने से स्पष्ट होता है कि नीच भंग राजयोग में जितने ग्रह नीच के होकर नीचभंग राजयोग निर्मित कर रहे हैं, जीवन में उतना ही उथल-पुथल होने के बाद व्यक्ति का जीवन स्थिर हो पाता है और वह सुव्यवस्थित उपलब्धि से भरे जीवन को प्राप्त करता है अत: यह सत्य है कि नीचभंग राजयोग साधारण बनने पर कुछ परेशानियों को झेलने के बाद व्यक्ति उच्च पद और प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

○○○

उत्तरी श्रीकृष्णापुरी, पटना-13